RNI No. UPHIN/2010/35514 **ISSN-0976-349X**

अंक–20 दिसम्बर–2021

यू.जी.सी. केयर लिस्ट में सम्मिलित

इतिहास दृष्टि

संपादक

सैयद नजमुल रज़ा रिज़वी

संपर्क

228-आर, पूरबी बशारतपुर
निकट एच.एन. सिंह क्रॉसिंग
गोरखपुर-273004

अनुक्रम

संपादकीय

1. महिला शिक्षा : समस्या एवं समाधान 1

– डॉ. सुधा कुमारी

2. जराय का मठ (बरूआ सागर) 5

– दीपा सिंह

3. मध्य पाषाण कालीन समाज का विस्तार-क्षेत्र व मानव एवं पर्यावरण सम्बन्ध

– कंचन कुमारी

4. विन्ध्य क्षेत्र का भौगोलिक परिचय बिहार राज्य के पश्चिम चम्पारण जिले के थारू जनजाति का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व : एक परिचय 11

– सुलेखा कुमारी

– डॉ० अभय कुमार सिंह

5. प्रेमचंद की कहानियों में आदर्शोन्मुखता का मर्म 18

– विवेकानन्द उपाध्याय

6. दलित आत्मकथा लेखन 24

– डॉ. मनीष कुमार

7. बुंदेलखंड में अस्मिता के संकट से जूझते सौंर आदिवासी 30

– डॉ. राजेन्द्र यादव

8. मुनि रामसिंह का साहित्यिक अवदान 35

– अमरेश

9. 'मूड्स' या 'स्वभाव' के कवि : शमशेर बहादुर सिंह 41

- अखिलेश कुमार त्रिपाठी

10. इसरो की व्यावसायिक उड़ान का विकासक्रम एवं इसके निहितार्थ 44

- दिग्विजय सिंह

11. सरोज स्मृति : एक अवलोकन 47

- डॉ० सौरभ सिंह विक्रम

12. छिंदवाड़ा का ऐतिहासिक गौरव : देवगढ़ का किला 52

- बिंदिया महोबिया

13. आदिवासी विस्थापन एवं महिलाओं की स्थिति 58

- डॉ. टीकम चन्द मीना

14. गांधी-चिंतन में हिन्दी भाषा और साहित्य 62

- डॉ. सत्य प्रकाश चतुर्वेदी

15. कुषाणकालीन आर्थिक दशा का विश्लेषणात्मक अध्ययन 67

- करिश्मा गुप्ता
- सुजीत कुमार सिंह
- धनजंय कुमार

16. 21वीं सदी में भारत नेपाल सम्बन्ध : समस्या एवं समाधान 78

- किरन प्रकाश
- डॉ. रितेश कुमार चौरसिया

17. आवां : युगीन संघर्षों का यथार्थ 83

- अंकिता त्रिपाठी

18- कीमियागरी के यथार्थ का जादू 88

- मणि रंजन राय

19. आत्मकथा की विकास यात्रा (अन्या से अनन्या विशेष संदर्भ में) 92

- रोशन राय

20- हिन्दी साहित्य में दलित विमर्श 96

- डॉ० प्रीति डोभाल

21. इक्कीसवीं सदी के स्त्री उपन्यासों में शैली विधान 100

- चन्दन शुक्ला

22. लोक प्रचलित बुन्देली कहावतें एवं मुहावरे 108

- डॉ. प्राची सिंह

23. प्राचीन भारतीय मुद्राओं पर अंकित सेना अस्त्र शस्त्र एवं आयुध प्रतीक : एक अध्ययन 114

- मनीषा

24. काशी महाजनपद के धार्मिक वास्तु 120

- डॉ. सत्य प्रकाश

25. भावलखेड़ा विकास खण्ड (जनपद शाहजहाँपुर) में गर्रा एवं खन्नौत नदी क्षेत्र का पुरातात्विक सर्वेक्षण 127

- श्रवण कुमार

26. गालो समुदाय की लोकोक्तियों में सामूहिकता का भाव 132

– अरुणा गोगोई

27. आदिवासी समाज में राजनीति का बढ़ते प्रभाव : 'खरगोशों का कष्ट' कहानी के विशेष 137

– पुजा नेउग

28. चम्बल सम्भाग की भौगोलिक पृष्ठभूमि 141

– भारती शर्मा

29. प्राचीन मुद्राओं पर अंकित विदेशी देवी-देवता : एक अध्ययन 150

– मनीषा

✷

प्राचीन मुद्राओं पर अंकित विदेशी देवी–देवताः एक अध्ययन

मनीषा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, गुरु नानक गर्ल्स कॉलेज, संतपुरा, यमुनानगर, हरियाणा

प्राचीन भारत में धर्म सम्पूर्ण वस्तु एवं राज्य की आधार शिला थी।[1] इसके अन्तर्गत प्राकृतिक तथा मानव निर्मित विधियों को भी रखा जाता था। धर्म मानवीय सभ्यता और संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग रहा है। धर्म एवं धार्मिक आदर्श सम्पूर्ण विश्व में मानवीय समाज को प्रभावित व अनुप्राणित करते है।[2] बृहदारण्यक उपनिषद्[3] के आधार पर धर्म का तादात्म्य सत्य से किया गया है। मनु के अनुसार ''राजतंत्र दैवीय है तथा धर्म तथा दण्ड का कुल योग है।'' उन्होंने दोनों के सम्बन्ध को इस प्रकार अन्तर–सम्बिन्धित किया है।

तदर्थ सर्वभूतानां गोप्तारं धर्ममात्मजम्।
ब्रह्मतेजोमयं दण्डमसृजत्पूर्णभश्वरः।।[4]

यद्यपि प्रत्येक क्षेत्र एवं काल विशेष के अन्तर्गत धर्म एवं धार्मिक आदर्शों का प्रकृति में परिवर्धन एवं भविष्य के देवी देवताओं की उपासना पद्धति एवं उपासना आदर्शों को देख कर समझा जा सकता है। प्राचीन मुद्राओं पर अंकित धार्मिक प्रतीक एवं दवोपासना कई काल खण्डों में विभाजित है। जो प्राचीन भारत में लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व से पूर्व–मध्यकाल में पृथ्वीराज चौहान III एवं मुहम्मद–बिन–साम की मुद्रा तक दृष्टिगत होता है। इसीलिए प्रारम्भ में मुद्राओं पर प्राकृतिक चिन्हों का अंकन होता था। वहीं कालान्तर में कर्म एवं क्रिया तत्वों के प्रधान हो जाने के कारण धर्म में विकृतियों का भी निरूपण होता है।[5]

भारत में ब्राह्मण धर्म मूलतः बहुदेववादी रहा है। यह सर्वविदित है कि आहत मुद्राओं पर पर्वत, वृक्ष, ज्यमितीय आकृति पशु (वृषभ, हस्ति) के अतिरिक्त स्वास्तिक, सूर्य, षडरचक्र इत्यादि बिम्बों का अंकन प्राप्त होता है।[6]

कालान्तर में सभी प्रतीक किसी न किसी देवता के साथ जुड़ गये व कई जगहों पर देवता को मूर्त रूप में भी प्रदर्शित किया गया। तत्पश्चात् लौकि देवताओं के बढ़ते प्रभाव के कारण वैष्णव एवं शैव धर्म की उत्तरोत्तर वृद्धि होती रही जिसका परिणाम मुद्राओं पर विविधता के साथ दृष्टिगत होता है।

भारतीय इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण मौर्योत्तर कालीन घटना विदेशी जातियों का भारत में प्रवेश संदर्भित रही है। हिन्द–यवन शासक स्वयं को देवताओं का वंशज मानते रहे हैं। उनकी मुद्राओं पर पाये गये देवमण्डल स्वभाविक रूप से यूनानी देवमण्डल से ग्रहण किये गये हैं, इनका देवमण्डल विशाल है। यूनानी देव परम्परा में सबसे महत्वपूर्ण देवता जीयस है, अन्य अधिकांश देव देवता इन्हीं के पुत्र–पुत्रियाँ हैं। यूनानी पौराणिक कथाओं में वर्णित कथानकों एवं देवताओं के गुण धर्म के आधार पर हिन्द–यवन शासकों ने देवी–देवताओं का अपनी मुद्राओं पर अंकन किया।[7] प्रमुख देवताओं में 'जीयस' (आकाश के देवता), 'हेराक्लिज' (राक्षसों से रक्षा करने वाले शक्ति के देवता जो जीयास के पुत्र हैं), 'अपोलो' (सूर्य देवता), डियास्कुरी (प्रातः एवं सायं कालीन देवता ये जीयस के दोनों पुत्रों 'कैस्टर' और 'पोलस' का संयुक्त नाम है जो दोनों अश्व प्रशिक्षण के आचार्य माने जाते है) इसके अतिरिक्त मुद्राओं पर यूनानी देवी के रूप में 'पल्लसएथेना' (आकाशीय देवी जो जीयस की पुत्री है), दूसरी देवी के रूप में 'नीके' का अंकन (पल्लस की पुत्री एवं विजय की देवी मानी जाती हैं) यद्यापि यह काफी कौतूहल का विषय है कि कुछ मुद्राशास्त्री इन देवियों को यक्षिणी की आकृतियाँ स्वीकार करते हैं जैसे कि आगाथाक्लिज और पेन्टालियान की मुद्रा पर ऐसी आकृतियाँ देखी जा सकती है। इन मुद्राओं पर अंकित यूनानी देवी–देवता का विवरण निम्न रूप से प्रदर्शित है।

जीयस :– यूनानी देवता जीयस को आकाशीय देवता के रूप में मानते हुए सम्पूर्ण यूनानी समाज एवं प्रकृति को इसके अधीन माना गया है। इसकी तुलना भारतीय परम्परा के वैदिक देवता द्यौंस के साथ की जाती है।[8] हिन्द–यवन, शक–पह्लव की मुद्राओं पर जीयस को स्थानक एवं सिंहासनारूढ़ रूप में विविधता के साथ दर्शाया गया है।

- हिन्द–यवन शासक अगाथाक्लिज की स्मारक अथवा संयुक्त मुद्रा पर जीयस को वामकर में राजदण्ड एवं दक्षिण कर में चील धारण किये हुए सिंहासनारूढ़ दर्शाया गया है।[9] किसी में वज्र फेंकते हुए स्थानक मुद्रा में जीयस को प्रदर्शित किया गया है।[10]
- शक–पह्लव शासकों में वोनोनीज एवं स्पलहोर[11], वोनोनीज एवं स्पलगद्म[12], स्पलरिस एवं एजेज–1[13], की मुद्रा में जीयस को एक हाथ में वज्र और दूसरे हाथ में राजदण्डधारी रूप में दर्शाया गया है।
- भावेस एवं माकेनीज[14], एजिलाइजेज एवं एजेज II[15], की मुद्रा में जीयस मुकुट पहने एक हाथ में वज्र धारण किए हुए दर्शाये गये हैं।
- गोण्डोफर्नीज एवं अस्पवर्मा[16], गोण्डोफर्नीज एवं सस[17] की मुद्रा में जीयस को बाएँ हाथ को फैलाएँ हुए तथा दाहिने हाथ में राजदण्ड धारण किए हुए दर्शाया गया है।

उपर्युक्त रूप में प्रतिमाशास्त्रीय दृष्टि से अगर हम जीयस के अंकनों का अध्ययन करें तो उनका स्वरूप भारतीय मिथक देवता इन्द्र के साथ काफी हद तक साम्य रखता है[18] जिस प्रकार इन्द्र का आयुध के रूप में वज्र व राजदण्ड लिए स्वरूप मिलता है, उसी प्रकार जीयस को भी विविध आयुध रूप में प्रदर्शित किया गया है।

हेराक्लिज :– हेराक्लिज का मुख्य आयुध गदा और धनुष बाण माना गया है परन्तु मुख्य रूप से हिन्द यवन, मुद्राओं पर उनका अंकन प्रायः गदा और सिंह–चर्मधारी के रूप में दिखाई पड़ता है। हेराक्लिज को यूनानी परम्परा में मुख्य रूप से 'जीयस का पुत्र एवं बल का देवता' माना जाता है। हिन्द–यवन, शक–पह्लव एवं कुषाण शासकों की मुद्राओं पर इनका अंकन किया गया है। जे0एन0 बनर्जी[9] महोदय ने हेराक्लिज की तुलना भारतीय देवता वासुदेव (विष्णु) से की है। कुछ सामान्य हिन्द–यवन मुद्राओं पर हेराक्लिज के साथ गदा के स्थान पर चक्र का अंकन भी आयुध के रूप में किया गया है। हेराक्लिज के साथ गदा एवं चक्र का अंकन प्रतिमाशास्त्रीय दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। मत्स्य पुराण[20] में विष्णु के अवतार कृष्ण का भी गदा धारण किये हुए उल्लेख मिलता है। जिस प्रकार कृष्ण को राक्षसों का संहारक माना जाता है। उसी प्रकार ग्रीक परम्परा में भी हेराक्लिज को मानवों के संरक्षक रूप में दर्शाया गया है।[21] इस प्रकार यह माना जा सकता है कि कृष्ण एवं हेराक्लिज मानव स्वरूप देव के रूप में पूजे जाते थे। मुद्राओं पर हेराक्लिज का विवरण निम्न रूप में दर्शाया गया है।

- अगाथाक्लिज की स्मारक या संयुक्त मुद्रा[22], अगाथाक्लिया एवं स्ट्रेटो[23], स्पलरिस एवं स्पलगदम्[24] की मुद्राओं में नग्न हेराक्लिज को पर्वत पर बैठे दाएँ हाथ में गदा लिए घुटने पर, बायाँ हाथ रखे हुए विश्राम की अवस्था में दर्शाया गया है।
- लिसियास एवं एन्टीयालकिड्स[25] की मुद्रा में सामान्य रूप से हेराक्लिज को गदा लिए प्रदर्शित किया गया है।
- वोनोनीज एवं स्पलहोर[26], वोनोनीज एवं स्पलगदम्[27], एजिलाइजेज एवं एजेज–II की मुद्राओं[28] में सामने की ओर मुँह किये, दाएँ हाथ से स्वयं को मुकुट पहनाते व बाएँ हाथ में सिंह चर्म धारण किये हुए अंकन है। वही कुजुलकैडफिसेस एवं हरमेयस की संयुक्त मुद्रा[29] में सिंह चर्म और गदा धारण किए हुए स्थानक मुद्रा में हेराक्लिज का अंकन है।

अपोलो :– अपोलो, सूरज, प्रकाश[30], संगीत[31], सत्य, चिकित्सा कविता और भविष्यवाणी के यूनानी भगवान के रूप में जाने जाते हैं। यह यूनानी पौराणिक कथाओं में सबसे प्रसिद्ध देवताओं में से एक हैं। अपोलो जीयस और लेटो का बेटा है। जिन्हें यूनानी तथा रोमन धर्म के सर्वोच्च देवताओं में से एक माना जाता है। इसके लिए प्राचीन यूनान और इटली में कई खूबसूरत मन्दिर बनवाये गये थे, जहाँ उनके नाम पर पशुबलि चढ़ाई जाती थी। वो आदर्श पुरुष–सौन्दर्य और यौवन का प्रतिनिधित्व करते थे। मूर्तियों में उनको अत्यधिक खूबसूरत (नग्न) युवा के समान दिखाया जाता था। 'ओलंपस' पर विराजमान बारह अमर देवताओं में भगवान अपोलो भी थे जो लोगों में सबसे अधिक पूजनीय और प्रेम करने वाले व्यक्ति थे। यह विधि–नियामक और दण्डक, चारवाहों के रक्षक, कानूनी आदेश कर्त्ता माने जाते थे। दवा के संरक्षक, अपोलो एक ही समय में बीमारियों को भेज सकते थे। गीत और धनुष उनका मजबूत साहसी आकृति है। अपोलो के प्रतीक के रूप में सूर्य का अंकन भी ज्ञात होता

है। इसके साथ ही साथ इसको कल्याण एवं स्वास्थ्य का प्रदाता माना गया है। इन मुद्राओं के क्रम में मात्र स्ट्रेटो I एवं स्ट्रेटो I के मुद्राओं पर अपोलो के दोनों हाथों से दायी ओर धनुष पकड़े हुए दर्शाया गया है। हिन्द–यवन शासकों की बहुतायत सामान्य मुद्राओं पर अपोलो का अंकन स्पष्ट रूप से किया गया है।

डियास्कुरी :– यूनानी परम्परा में डियास्कुरी को जीयस के दो जुड़वा पुत्र 'केस्टर' और 'पोलक्स' के रूप में एक साथ जाना जाता है। उनकी माँ लेदा थीं लेकिन उनके अलग–अलग पिता थे। कैस्टर–स्पार्टा के राजा, टेंडारेस का पुत्र था जबकि पोलक्स जीयस का दिव्य पुत्र था। कैस्टर और पोलक्स[33] को अश्व प्रतिरक्षक एवं मुक्केबाजी के आचार्य के रूप में जाना जाता है। हिन्द यवन शासक 'लिसिपास एवं एण्टीयालकिड्स' की संयुक्त मुद्रा[34] के पृष्ठ भाग पर डियास्कुरी को दो टोपी एवं दो खजूर पत्रों के रूप में दिखाया गया है। डियास्कुरी को व्यापक घुड़सवार यात्री की टोपी के साथ युवा घुड़सवार के रूप में चित्रित किया जाता है। इसको तारामण्डल मिथुन (जुड़वाँ) के रूप में सितारों के बीच रखा गया था।

पल्लस (एथेना) :– यूनानी देवी पल्लस का दूसरा नाम 'एथेना' भी जाना जाता है। यह जीयस की पुत्री है। यह आकाशीय देवी है, तथा प्रकाश, उष्मा और ओंस के रूप में वनस्पतियों को उर्वरता प्रदान करती हैं। एथेना को बुद्धि, शिल्प एवं युद्ध की देवी के रूप में जाना जाता है। लगभग समस्त हिन्द–यवन शासकों ने अपनी मुद्राओं में एथेना को विविध रूप में अंकित किया है। भारतीय मौद्रिक परम्परा में एथेना को हिन्द–यवन, शक–पह्लव की मुद्राओं पर अंकित किया गया है। इनके प्रतीक के रूप में उल्लू, जैतून वृक्ष, साँप, गार्गन (दैत्याकार मुखाकृति) का अंकन भी ज्ञात होता है। सामान्यतः एथेना वस्त्र फेकते हुए ही अंकित पायी जाती है। ग्रीक पौराणिक कथाओं में इनकी उत्पत्ति जीयस के मस्तक से बतायी गयी है। पाश्चात्य परम्परा में एथेना को 'स्वतंत्रता एवं लोकतंत्र' का प्रतीक माना जाता है। यही कारण है कि 'आस्ट्रिया पार्लियामेन्ट' के इमारत के सामने पल्लस (एथेना) का अंकन है।[35] मुद्राओं पर एथेना का अंकन विविध रूपों व आयुधों के साथ प्रदर्शित किया गया है जिसका विवरण निम्न है–

- अगाथाक्लिया एवं स्ट्रेटो[36] एजिलाइजेज एवं एजेज II[37] की मुद्रा पर एथेना को बाएँ हाथ में रक्षा कवच तथा दाएँ हाथ में वज्र फेंकते हुए प्रदर्शित किया गया है।
- स्ट्रेटो एवं स्ट्रेटो II[38] की मुद्रा में एथेना को सामान्य रूप से मात्र वज्र धारण किए हुए दर्शाया गया है।
- वोनोनीज एवं स्पलहोर[39], वोनोनीज एवं स्पलगदम्[40] की मुद्रा में एथेना को शिरस्त्राण धारण किए हुए बाएँ हाथ में भाला व कवच तथा दाहिने हाथ में माला पकड़े हुए तथा कमर पर तलवार लटकते हुए अंकित किया गया है।
- एजेज II एवं इन्द्रवर्मा[40], एजेज II एवं अस्पवर्मा[42] की मुद्रा में एथेना को स्थानक मुद्रा में आयुध धारण किए हुए बाएँ हाथ में भाला एवं कवच लिए तथा दाहिने हाथ को आगे की ओर फैलायें हुए दर्शाया गया है।

नाइके :–

नाइके ग्रीक पौराणिक कथाओं में 'विजय की देवी' मानी जाती थी। जिसे पंखो के रूप में चित्रित किया गया था। इसलिए इनका एक वैकल्पिक नाम ''बिंग्ड देवी'' भी माना जाता है। यह 'टाइटन' (पल्लस) की बेटी और देवी स्टैक्स, क्रैटोस (शक्ति) बिया (फोर्स) और जेलस (उत्साह) की बहन थी। चार भाई–बहन जीयस के साथी थे और नाइके की भूमिका दिव्य सारथी की थी, जो युद्ध के मैदानों से ऊपर उड़ती थी और विजेताओं को गौरव प्रदान करती थी।

नाइके को प्राचीन ग्रीक फूलदान पेटिंग में चित्रित किया गया। जिसमें इन्हें कई प्रकार के गुणों के साथ पुष्पांजलि देते हुए चित्रित किया गया। मुद्राओं पर भी पाये गये अंकनों में मुख्य रूप से इन्हें पुष्पांजलि देते हुए प्रदर्शित किया गया है। इसके अलावा युद्ध के दृश्य में वह जीयस के सारथी के रूप में भी दिखाई पड़ती है। सर्वप्रथम एथेना, नाइके का मंदिर प्रोपेलिया के दापीं ओर एक्रोपोलिस पर इओनिक मंदिर 'पल्ली' के शासनकाल के दौरान पार्थेनन के वास्तुकारों द्वारा बनाया गया था मुद्राओं पर इसका विवरण निम्न है–

- भावेस एवं माकेनीज[43], एजिलाइजेज एवं एजेज II[44] की संयुक्त मुद्रा में नाइको को धारण किये हुए स्थानक मुद्रा में जीयस का अंकन किया गया है।
- आर्थेग्नीज–गोण्डोफर्नीज एवं गुद[45] आर्थेग्नीज एवं गुद[46] गोण्डोफर्नीज एवं गुद[47]द्व गोण्डोफर्नीज लांघन एवं सपेदना[48] गोण्डोफर्नीज लांघन एवं संतवस्त्र[49], पकोरेस एवं सस[50] के मुद्राओं में नाइके को खजूर पत्र धारण किये हुए दाहिने हाथ से पुष्पांजलि देते हुए स्थानक मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है।

आर्दोक्षो :– यह देवी प्रायः रोमन देवी के रूप स्वीकृत हैं, जिनको सौभाग्य की देवी माना जाता है। जिनकी समरूपता बौद्ध धर्म में 'हरीति' फारसी देवी 'अनहिता' तथा हिन्दू धर्म में देवी 'लक्ष्मी' से की जाती है।[51] आर्दोक्षो देवी का अंकन सर्वप्रथम कनिष्क I की मुद्रा पर दृष्टिगत होता हे।[52] मुद्राओं के सन्दर्भ में देवी का अंकन स्थानक व सिंहासनारूढ़ दो रूपों में हुआ है। यद्यपि मुद्राओं के सन्दर्भ में देवी का अंकन कनिष्क III एवं वासुदेव II की मुद्रा का सिंहासनारूढ़ रूप में हुआ है।[53]

जिनकों दाएँ हाथ में पाश एवं बाएँ हाथ में कार्नुकोपिया लिये हुए प्रदर्शित किया गया है, जिसमें देवी का पैर पाद पीठ पर अवस्थित है। यहाँ पर अंकित देवी आर्दोक्षो का अंकन ईरानी देवी अहुरमज्दा की पुत्री के रूप में स्वीकार किया जाता है।[54] जो ऐश्वर्य, संतति, अस्त्र–शस्त्र एवं विजय की प्रदात्री देवी है।

जिन मुद्राओं पर देवी सिंहासनारूढ है, उनके दाहिने हाथ में पुष्प एवं बाएँ हाथ में गेहूँ की बाली है, जिनकी तुलना यूनानी देवी 'डेमेटर' के साथ ही जाती है।[55] कुछ मुद्राएँ कनिष्क III तथा वासुदेव II की है जिन पर अंकित देवी कार्नुकोपिया लिये हुए है जो यूनानी देवी 'टाइचे' (टाइसे) के आयुध सदृश्य दृष्टिगत है।[56] टाइचे (टाइसे) देवी का अंकन ईरानी देवी 'ईस्तर' के सदृश्य मिलता जुलता है।[57] जिसकी साम्यता गुप्तकाल में देवी लक्ष्मी से गुणधर्म और प्रतीकांकन आधार पर की जाती है। इनकी मुद्राओं पर देवी को अधोभाग में धोती व ऊपरी वस्त्र के रूप में चोली के साथ–साथ उन्हें आभूषणों से युक्त दर्शाया गया है।[58] जो भारतीयता व देवी लक्ष्मी से सादृश्यता का प्रतीक है। जिसके प्रमाण स्वरूप 'सोख' की खुदाई के उपरान्त प्रो0 हर्टल महोदय को प्राप्त उत्तरकालीन ताम्र मुद्रा का उल्लेख आवश्यक है। जिसमें आसन पर बैठी आर्दोक्षो देवी के पैर के नीचे कमल खिला हुआ बना है।[59] उपरोक्त उदाहरण आर्दोक्षो देवी के भारतीयकरण का प्रथम प्रमाण है। कालान्तर में गुप्तकाल में शासकों की मुद्राओं पर यही आर्दोक्षो पूर्णतया भारतीय प्रतिरूप में दृष्टिगत होता है। अतएव यह सम्भावना अवश्य व्यक्त की जा सकती है कि जिस प्रकार 'ननना' सिंह वाहिनी दुर्गा के रूप में भारतीय संस्कृति में समावेशित हो गयी। उसी प्रकार सम्भवतः आर्दोक्षे सिंहासनस्थ पा कमलासनस्थ भारतीय देवी लक्ष्मी के रूप में परिवर्तित हो गयी। भारत में कुषाणों के बाद कुछ अन्य छोटी सहायक जनजातियाँ हुई जिन्होंने अपनी संयुक्त मुद्राओं पर आर्दोक्षो का अंकन किया जिसका विवरण निम्न है–

गद्हर एव किदार[60], गद्हर एवं समुद्र[61], शक और शिलादास की मुद्राओं में, शक एवं साया, शक एवं सीता[62], शक एवं सना[63], शक एवं भद्रा[64], शिलादाय एवं बचरना[65], शिलादास एवं पाशवा[66] की मुद्राओं में आर्दोक्षो को बैठे हुए अंकित किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. डेविड्स, रिज; बुद्धिस्ट इण्डिया, पृ0 132
2. मजुमदार, आर0सी0, पुसाल्कर, ए0डी0, द एज ऑफ इम्पीरियल यूनिटी, पृ0 257
3. नारायन, ए0के0, रिलीजस पालिसी एण्ड टालरेशन इन एन्शियेन्ट इण्डिया, रीसर्च पेपर बी0एल0 स्मिथ, एसेज ऑन गुप्ता कल्चर, पृ0 20
4. मनुस्मृति, 7.14
5. विद्यार्थी, एम0एल0, इण्डियन कल्चर थ्रु एजेज, पृ0 200
6. उपाध्याय, वासुदेव, प्राचीन भारतीय मुद्राएँ, पृ0 40–41
7. गुप्ता, सुमन, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृ0 67
8. राव, राजवंत, प्राचीन भारतीय मुद्राएँ, पृ0 88–89
9. पंजाब, म्यूजियम कैटलॉग, 2–4।
10. ब्रिटिश म्यूजियम कैटलॉग, 4,2

11. ब्रिटिश म्यूजियम कैटलॉग, प्लेट XXI, न0 7
12. जेंकिंस, जी0के0, ए0के0 नारायन, द क्वायन टाइप्स ऑफ द शक–पह्लव किंग्स ऑफ इण्डिया (न्यूमिस्मेटिक्स नोट्स एण्ड मोनोग्राफ्स नं0 4) द न्यूमिस्मेटिक्स सोसाइटी ऑफ इण्डिया, बनारस, 1957, पृ0 3
13. पूर्वोक्त, पृ0 5
14. जनरल न्यूमिस्मेटिक सोसाइटी ऑफ इण्डिया, जिल्द XIV, पृ0 27
15. ब्रिटिश म्यूजियम कैटलॉग, 20–3
16. श्रीवास्तव, प्रशांत, ज्वायन्ट टाइप्स क्वायन्स ऑफ एन्शियेन्ट इण्डिया पृ0 19
17. श्रीवास्तव, प्रशांत, ज्वायन्ट टाइप्स क्वायन्स ऑफ एन्शियेन्ट इण्डिया पृ0 19
18. चट्टोपाध्याय, बी0 क्वायन्स एण्ड आइकान्स : ए स्टडी ऑफ मिथ एण्ड सिम्बल इन न्यूमिस्मेटिक आर्ट, पृ0 123
19. बनर्जी, जे0एन0, रीलिजन इन आर्ट एण्ड आर्कियालॉजी, पृ0 3–4
20. मत्स्यपुराण, अध्याय, 258, V 10
21. लारोसे–इनसाइक्लोपिडिया ऑफ माइथोलॉजी, पृ0 192
22. ब्रिटिश म्यूजियम कैटलॉग, 4,3
23. लहरी, ए0एन0; कॉर्पस ऑफ इण्डोग्रीक क्वायन्स, 72 प्लेट I,3
24. कनिंघम ए0; क्वायन्स ऑफ द शक, पृ0 36 प्लेट IV, 7
25. श्रीवास्तव, प्रशान्त, ज्वायन्ट क्वायन्स टाइप्स ऑफ एन्शियेन्ट इण्डिया, पृ0 16
26. पंजाब म्यूजियम कैटलॉग, पृ0 141 प्लेट XIV, 379
27. पंजाब म्यूजियम कैटलॉग, पृ0 141 प्लेट XIV, 379
28. ब्रिटिश म्यूजियम, कैटलॉग, प्लेट XXI, 5
29. ब्रिटिश म्यूजियम कैटलॉग, पृ0 120–1
30. चट्टोपाध्याय, बी, क्वायन्स एण्ड आइकान्सः ए एटडी ऑफ मिथ एण्ड सिम्बल इन न्यूमिस्मेटिक आर्ट, पृ0 123
31. चट्टोपाध्याय, बी; क्वायन्स एण्ड आइकान्स : ए स्टडी ऑफ मिथ एण्ड सिम्बल इन न्यूमिस्मेटिक आर्ट, पृ0 123
32. श्रीवास्तव, प्रशांत, ज्वायन्ट टाइप्स क्वायन्स ऑफ एन्शियेन्ट इण्डिया, पृ0 16
33. सिंह, एस0एस0, अर्ली क्वायन्स ऑफ नार्थ इण्डिया : इन आइक्रोग्राफिक स्टडी, पृ0 86
34. ब्रिटिश म्यूजियम कैटलॉग, प्लेट XXXI, 2
35. डायसी, सुसन, एथेना, 2008 लन्दन, पृ0 145–149
36. लहरी, ए0एन0; कॉर्पस ऑफ इण्डोग्रीक क्वायन्स, 72 प्लेट 1.3
37. कनिंघम, ए0, पृ0 47
38. कोरोल्ला न्युमिस्मेटिक, पृ0 25, प्लेट XII, 12
39. पंजाब म्यूजियम कैटलॉग पृ0 141, प्लेट XIV, 379
40. पंजाब म्यूजियम कैटलॉग पृ0 141, प्लेट XIV, 379
41. मुखर्जी, बी0एन0; एन एग्रीपन सोर्स इन इण्डो पार्थियन हिस्ट्री, पृ0 88, प्लेट III, 14
42. कनिंघम, ए0; क्वायन्स ऑफ द शक, पृ0 67–68, प्लेट XII, 6
43. राव, रजवंत; प्राचीन भारतीय मुद्राएँ, पृ0 132
44. ब्रिटिश म्यूजियम कैटलॉग, 21–3
45. म्यूमिस्मेटिक नोट्स एण्ड मोनोग्राफ्स (न्यूमिस्मेटिक सोसाइटी ऑफ इण्डिया) नं0 4, पृ0 16
46. पंजाब म्यूजियम कैटलॉन पृ0 156, नं0 75
47. श्रीवास्तव, प्रशांत; ज्वायन्ट टाइप्स क्वायन्स ऑफ एन्शिपेन्ट एण्डिया, पृ0 19
48. तक्षशिला, पृ0 816, प्लेट 241, नं0 211
49. तक्षशिला, पृ0 217, प्लेट 241, नं0 211
50. तक्षशिला, पृ0 815, प्लेट 241

51. चट्टोपाध्याय बी0; क्वायंस एण्ड आइकांस : ए स्टडी ऑफ मिथ्स एण्ड सिम्बल्स इन न्यूमिस्मेटिक आर्ट, पृ0 90
52. राव, राजवंश; प्राचीन भारतीय मुद्राएँ, पृ0 178
53. श्रीवास्तव, प्रशान्त; ज्वायन्ट टाइप्स क्वायन्स ऑफ एन्शियेन्ट इण्डिया, पृ0 19
54. स्पेन्से, एन0पी0; प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान, पृ0 119
55. स्पेन्से, इन इण्ट्रोडक्शन ऑफ माइथोलाजी, पृ0 129–130
56. आक्सफोर्ड क्लासिकल डिक्शनरी, पृ0 263
57. इनसाइक्लोपीडिया ऑफ रिलियन एण्ड एथिक्स, खण्ड VII, पृ0 430–31
58. रोजेनफील्ड, जे0एम0; द डायनेस्टिक आर्ट ऑफ द कुषाण, प्लेट XII, पृ0 237–40
59. जोशी, एन0पी0; प्राचीन भारतीय मूर्ति विान पृ0 118
60. कनिंघम, ए0 ; लेटर इण्डो सीथियन, पृ0 124, प्लेट II,10
61. कनिंघम, ए9 ; लेटर इण्डो सीथियन, पृ0 124, प्लेट II, 11
62. स्मिथ, वी0ए0 ; इण्डियन म्यूजियम कैटलॉग, वाल्युम –I, पृ0 89, प्लेट XIV, नं0 6
63. स्मिथ, वी0ए0 ; इण्डियन म्यूजियम कैटलॉग, वाल्युम –I, पृ0 89, प्लेट XIV, नं0 7
64. स्मिथ, वी0ए0 ; इण्डियन म्यूजियम कैटलॉग, वाल्युम –I, पृ0 88, प्लेट XIV, नं0 2
65. स्मिथ, वी0ए0 ; इण्डियन म्यूजियम कैटलॉग, वाल्युम –I, पृ0 89, प्लेट XIV, नं0 8
66. स्मिथ, वी0ए0 ; इण्डियन म्यूजियम कैटलॉग, वाल्युम –I, पृ0 89, प्लेट XIV, नं0 14